

HUMANISTIC Psychology by MASLOW & ROGERS

मनोविज्ञान की सर्वाधिक प्रगति में, दूसरों की तुलना में, जिस किसी एक सम्प्रदाय ने आरम्भ ग्रहण किया है - इसे निःसंकोच 'HUMANISTIC' इच्छा या 'HUMANISTIC PSYCHOLOGY' के नाम से पुकारा जा सकता है, जिसका आरम्भ परम्परा से सर्वथा अलग 1950's तथा 1960's के दशक में ALLPORT, CARL ROGERS, ABRAHAM MASLOW जैसे विद्वानों के कुशल नेतृत्व में हुआ। कहा जाता है कि यह विचारधारा है जो PSYCHOANALYSIS तथा BEHAVIORISM के रंगारंग से अव्यक्त और गहरे रूप से प्रभावित थी, पर, और, से देखें तो उन सम्प्रदायों से इसकी लेशरही भी काफी साफ तौर से दीर्घगत होती है। 'है' कि HUMANISTIC SCHOOL को मनो-विश्लेषण से PSYCHIC ENERGY, अवस्था, और इच्छा इत्यादि की अवधारणाएँ मिलीं, पर यह मनुष्य को केवल BEHAVIORAL PSYCHOLOGY मात्र ही मानने को तैयार, कदापि नहीं है, जिसका रूप उजाड़ने का होता है। लेकिन यह दीर्घगीर्ण मनुष्य को सर्वथा ही अनोखा (UNUSUAL) और विश्वज्ञान जीवन मानता है और व्यक्ति के आरम्भ में 'इच्छा' को केन्द्रिय स्थान देता है। FERNALD (1979) के अनुसार

"Humanistic Psychology is an approach to psychology which emphasizes human uniqueness, subjectivity, and capacity for psychological growth."

इस इतिहास, BEHAVIORISTIC approach से प्रेरणा लेकर यह दीर्घगीर्ण व्यक्ति और व्यवहारों की व्याख्या में तो LEARNED BEHAVIOR को ग्रहण करता है, पर पुनः इस बात को लेकर यह कुछ आलोचना भी कर सकता है कि व्यवहारों की व्याख्या में मनोवैज्ञानिक गहन तथा आन्तरिक अनुभवों की और विवेक्षा की गई है। परन्तु व्यक्ति एक सम्बन्ध है जहाँ व्यक्ति की सभी शक्तियों का एक अनोखा गहन है। मान्यतावादी विचारधारा ऐसा साफ-साफ मानता है कि हर इंसान तीन तरह से अपने को प्रकट करता है - जैविक क्षमताओं द्वारा, दूसरे लोगों से सम्बन्धों द्वारा तथा स्वयं

से सम्बन्धों द्वारा। संक्षेप में, हम यह कहते हैं कि सफलता के क्षेत्र में सम्भावनाएँ व्यक्ति से व्यक्ति हैं, पर विज्ञान-उन्मुखी विद्वानों के स्वीकार्य होने के लिए अभी और प्रयास किया जाना शेष है।

व्यपहार और व्यक्तिगत की व्याख्या में सफलता-

- the approach मुख्यतः तीन concepts का सहारा लेती है -

(i) Self concept .

(ii) Self identity .

(iii) Self fulfillment .

(1902-.....) अपने 'Self theory' को प्रस्तावित करते हुए ROGERS (ने 'Self' (स्व) को केन्द्रिय महत्व प्रदान किया और यह बातसाया कि Self के द्वारा ही व्यक्ति अपने पातावरण से परिचित होता है और भावों की आत्मसात करता है। अपने ही गीह्त की अनुसूच प्रत्यक्षीकरण के माध्यम से हर इंसान अपना 'Self' गीह्त एवं निर्मित करता है। व्यक्ति अपने Self के अन्तर्स्थ पहलू का समग्र प्रत्यक्षीकरण (directed perception) स्वयंम करता है, इसे गीह्त करता है तथा सुस्पष्टीकरण हर जीवन-मूल्यों से जोड़ता है। Self इस समय अधिक सक्रिय होता है जबकि इसमें सहजता होती है और वह कार्य के लिए अपने ही व्यापारों से मुक्त पाता है। Self अपने अग्रमों, परिपक्वता तथा शिक्षण के द्वारा अपने में परिवर्तन लाता है। ROGERS के अनुसार किसी भी व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक तथा व्यवहारगत विशेषताओं के योग को ही 'Self' कहा जाता है।

ROGERS ने अपने 'Self theory'

में 'Self concept' (आत्मसिद्धि) पर भी विचार बल दिया। इसके अनुसार, 'Self' के यथार्थ स्वरूप को जानना ही आत्मसिद्धि है तथा आत्मसिद्धि का केन्द्र बिन्दु वह लक्ष्य है जिस व्यक्ति सबसे अधिक महत्वपूर्ण मानकर इसकी प्राप्ति के लिए सतत प्रयत्नशील रहता है। प्रत्येक व्यक्ति का यह जन्मजात स्वभाव होता है कि वह आत्मसिद्धि के लिए निरन्तर प्रयास करे। यहाँ उसे उन परिस्थितियों से भी सामना करना पड़ता है जो उसके इस लक्ष्य की प्राप्ति में रुकावट पैदा करते हैं। ROGERS के अनुसार, प्रत्येक की यह मूल प्रेरणा है कि वह अपनी सच्चे अर्थों में जानें (Self identity): सच पूछें तो व्यक्ति के द्वारा किए जाने वाले सभी कार्यों के मूल में यही इच्छा प्रबल होती है कि वह अपने वास्तविक स्वरूप से परिचित हो सके।

जब व्यक्ति में आत्मसिद्धि के फलस्वरूप एक विशिष्ट प्रकार की पूर्णता आ जाती है, तब वह स्वर्ण मूल्यमान (स्वानुभव) के लिए प्रयत्नशील रहता है। स्वानुक्षण में शिक्षण व्यक्ति के व्यक्तिगत में एक विशिष्ट प्रकार की परिपक्वता पाई जाती है, जिसके फलस्वरूप वह सभी तरह की समस्याओं का सामना करने में समर्थ होता है। संक्षेप में, स्वानुक्षण के फलस्वरूप व्यक्ति की योग्यता का विस्तार होता है तथा उसके और अन्य के बीच किसी प्रकार की दूरी नहीं रहती। ROGERS के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति Self-enhancement (आत्मवर्द्धन) करना चाहता है, जो कि आत्मसिद्धि के बाद भी चलती रहती है। इसलिए उसे उमी-2 पैसा करने में सहितियों का भी सामना करना होता है। इसे लागू है कि स्वर्ण अपने लक्ष्य के विद्युत् निकट पहुँच चुका है तो उमी लगता है कि लक्ष्य किसी पहुँच से बहुत दूर है।

ROGERS ने व्यक्ति के व्यक्तिगत एवं व्यवहार में मौजूद असमान्यताओं को भी स्वर्ण के आधार पर ही व्यक्तित्व को का प्रभाव दिया। किन्तु अनुसार यदि वास्तव जगत के साथ व्यक्ति का तासम्यक नहीं रहता तो दुःखमयोजन या असमान्यता देखी जाती है। इसे दूर करने के लिए ROGERS ने जिस विधि का विधि को विकसित किया उसे Non-directive या Client-centred विधि के नाम से जाना जाता है। ROGERS का यह प्रयास रहा है कि मानसिक रोगी को स्वयंसेवक बनाया जाए कि वह अपने Self (स्व) के वास्तविक स्वरूप से परिचित हो। प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए कि वह अपने अनुभव पर विश्वास रखे तथा अनुभव के आधार पर ही धारणा जाए। सुनो-सुनाई जाते के आधार पर ही कोई निर्णय न लें। सभी तरह के पूर्वाग्रहों से मुक्त हो, ताकि अन्य लोग इससे निवृत्तता का अनुभव करें।

इस प्रकार हम देखते हैं कि ROGERS का विचार वास्तव में स्वर्ण के विषय में अत्यधिक संवेदनशील है और नहीं-नहीं तो इसका स्वरूप भारतीय विधिनिषेध दर्शन की आसक्त का प्रतीक होता है। आलोचक ऐसा मानते हैं कि ROGERS की Self-fulfilling हमेशा परिवर्तनशील है और शायद इसीलिए इसका कोई अग्रिम रूप हमारे सामने नहीं आ पाया। यदि शीर्ष से देखें तो पता चलेगा कि ऐसा होना विद्युत् स्वाभाविक है, क्योंकि ROGERS ने जिस व्यक्ति के स्वर्ण की बात की है वह अत्यन्त गल्पकर्म है और किन्तु लोक में भिन्न नहीं हैं कि विकास एवं परिवर्तन होते रहते हैं।